



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 87]
No. 87]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, अप्रैल 8, 1999/चैत्र 18, 1921
NEW DELHI, THURSDAY, APRIL 8, 1999/CHAITRA 18, 1921

पाणिष्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 अप्रैल, 1999

विषय :—मैक्सिको से एक्रेलिक फाइबर के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच—आरंभिक निष्कर्ष।

सं. 21/1/98 डीजीएडी.—कस्टम टेरिफ अधिनियम, 1975 एवं उसके कस्टम टेरिफ (पाटित वस्तुओं पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्कों की पहचान, आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क पद्धति

1. जांच के लिए निम्नलिखित पद्धति का पालन किया गया है।

- नामनिर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) ने, उक्त नियमों के अधीन मैसर्स इंडियन एक्रेलिक लि., चंडीगढ़, मैसर्स पशुपति एक्रोलोन लिमिटेड, नई दिल्ली तथा मैसर्स कंसोलिडेटेड फाइबर एंड कैमोकल्स लिमिटेड, कलकत्ता से एक लिखित याचिका प्राप्त की है जिसमें मैक्सिको मूल के या वहां से निर्यात किये गए एक्रेलिक फाइबर के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- याचिका की आरंभिक जांच से कतिपय त्रुटियों का पता लगा जिन्हें वादी द्वारा बाद में दुरुस्त कर दिया गया है। इसलिए याचिका को सही दस्तावेज माना गया है।
- वादी द्वारा प्रस्तुत किये गए पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर प्राधिकारी ने, मैक्सिको मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाइबर के पाटित आयात की जांच का आरंभ करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने नियमों के नियम 5 (5) के अनुसार,

जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले, पाटन के आरोप के प्राप्त होने की सूचना सम्बद्ध देश के दूतावास को दी।

- प्राधिकारी ने सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 55 में वर्गीकृत, मैक्सिको मूल के अथवा वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाइबर के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए, 30 जुलाई, 1998 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई।
- प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति उन सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके व्योरे वादी द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) तथा उद्योग संघों को भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया;
- प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति एक्रेलिक फाइबर के उन सभी ज्ञात आयातकों (जिनके व्योरे वादी द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) को भी भेजी और उनसे पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने के लिए कहा ;
- केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से एक्रेलिक फाइबर के आयात का विस्तृत विवरण उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था।
- प्राधिकारी ने उक्त नियम 6 (3) के अन्तर्गत ज्ञात निर्यातकों तथा सम्बद्ध देश के दूतावास को याचिका की प्रतियां भिजवाई;
- प्राधिकारी ने नियम 6 (4) के अन्तर्गत अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए मैक्सिको के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजी ;

- * फाईब्रास नेशनेल द एक्रिलिको,
 - * सेलुलोसा चाई देरीवादोस, एस ए दे सी बी
- निर्यातकों में से किसी ने भी निर्धारित प्रपत्र पर प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया।
- (x) नियम 6 (2) के अन्तर्गत जांच के आरंभ की सूचना देते हुए मैक्सिको दूतावास से अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समय में देने की सलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका तथा प्रश्नावली की एक प्रति एवं ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची भी दूतावास को भेजी गयी थी।
- (xi) भारत में एक्रेलिक फाइबर के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों को नियम 6(4) के तहत आवश्यक सूचना मांगते हुए प्रश्नावली की एक प्रति भेजी गयी थी;

- * वर्धमान स्पनिंग एंड जनरल मिल्स लुधियाना
- * नाहर स्पनिंग मिल्स लिमिटेड लुधियाना
- * मालवा काटन स्पनिंग मिल्स लिमिटेड लुधियाना
- * राजस्थान स्पनिंग एंड वीविंग मिल्स लिमिटेड नई दिल्ली
- * विन्सम टैक्सटाईल इंडस्ट्रीज लिमिटेड, चण्डीगढ़
- * सिद्धार्थ सुपर स्पनिंग मिल्स लिमिटेड नई दिल्ली
- * भिवानी टैक्सटाईल मिल्स हरियाणा
- * आदिनाथ टैक्सटाईल लिमिटेड लुधियाना
- * श्रुति सिंथेटिक्स लिमिटेड उदयपुर

निम्नलिखित ने प्रश्नावली का उत्तर दिया था :—

- * भिवानी टैक्सटाईल मिल्स
 - * नाहर स्पनिंग मिल्स लिमिटेड
 - * विन्सम टैक्सटाईल इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 - * आदिनाथ टैक्सटाईल लिमिटेड
- (xii) निर्यातकों में से एक पार्टी ने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए कुछ अतिरिक्त समय दिए जाने का अनुरोध किया था जिसे प्राधिकारी ने संतोषजनक कारण को खजह से मान लिया।
- (xiii) प्राधिकारी ने, विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय पाठ्यांश, एक सार्वजनिक फाईल के रूप में, हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण के लिए उपलब्ध करा दिए थे।
- (xiv) सामान्य स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएपी) एवं वादी द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर, भारत में विषयगत वस्तुओं के उत्पादन और बिक्री के लिए उत्पादन की युक्ततम लागत का

पता लगाने के लिए, लागत की जांच की गयी जिससे यह निश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क लगाना, स्वदेशी उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

- (xv) ***यह संकेत इस अधिसूचना में, एक हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीयता के आधार पर उपलब्ध कराई गयी सूचना का द्योतक है एवं नियमानुसार प्राधिकारी द्वारा उसे ऐसा माना गया है।
- (xvi) प्राधिकारी ने आवश्यकतानुसार वादियों के परिसरों में पहुंचकर स्थलीय जाँच-पड़ताल की।
- (xvii) यह जाँच 1 अप्रैल, 1997 से 31 मार्च, 1998 की अवधि के लिए की गयी थी।

ख. वादी के विचार

2. वादी ने अपनी याचिका तथा बाद के अभिवेदनों में निम्नलिखित मुख्य मुद्दे उठाए हैं :—

- (i) वादी ने दावा किया है कि भारत में एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन निम्नलिखित कम्पनियों द्वारा किया जा रहा है :—

कम्पनी का नाम	उत्पादन (मी. ट.) 1997-98
क. इण्डियन एक्रेलिक्स लिमिटेड	27,183
ख. पशुपति एक्रोलोन लिमिटेड	18,485
ग. कंसोलिडेटेड फाइबर एंड केमीकल्स लि.	13,001
घ. जे. के. सिंथेटिक्स लि.	—
ङ. इंडियन पेट्रोकेमिकल कोर्पोरेशन	20,800

वादी ने कहा है कि जे. के. सिंथेटिक्स लिमिटेड में इस समय काम नहीं हो रहा है। मैसर्स जे. के. सिंथेटिक्स लिमिटेड की स्थिति स्पष्ट करने का अनुरोध करते हुए प्राधिकारी ने रसायन एवं पेट्रो-रसायन विभाग, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय को पत्र लिखा। रसायन एवं पेट्रो-रसायन विभाग ने अपने पत्र तारीख 3 फरवरी, 1999 द्वारा स्पष्ट किया कि मै. जे. के. सिंथेटिक्स लिमिटेड की कोटा तथा झालावाड़ में 24000 मी. टन की एक्रेलिक फाइबर की कुल संस्थापित क्षमता है। उनका एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन 1997-98 में घटकर 593 मीट्रिक टन आ गया था। वर्ष 1997-98 के दौरान एक्रेलिक फाइबर के कम उत्पादन का कारण, दोनों ही यूनिटों में, जो इस समय नहीं चल रही हैं, तालाबंदी होना तथा कार्यचालन पूंजी की कमी था।

कुल भारतीय उत्पादन में वादी कम्पनियों का हिस्सा 73.27 प्रतिशत है। और भी, वादी को एक्रेलिक फाइबर उत्पादकों के फोरम का समर्थन भी प्राप्त है। अतः वादी स्वदेशी उद्योग की ओर से वर्तमान याचिका दायर करने के आधार को संतुष्ट करते हैं।

- (ii) यह कहा गया है कि वादी कम्पनियां आयातित एक्रिलोनाइट्राईल पर निर्भर हैं जो उत्पाद को तैयार करने के लिए मुख्य कच्चा माल है। इसलिए वे अन्तर्राष्ट्रीय दादागिरी के दबाव में हैं।
- (iii) यह दावा किया गया है कि स्वदेशी उद्योग के पास वर्तमान एवं भावी मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता विद्यमान है। विचाराधीन उत्पाद के विषय में जागृति के स्तर को उठाने के लिए संभावित ग्राहकों हेतु एवं देश के अन्य क्षेत्रों में उपाय किए जा रहे हैं।
- (iv) आजकल एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन विश्व भर में काफी अधिक मात्रा में किया जा रहा है जो विश्व मांग से कहीं ज्यादा है। परिणामतः अनेक उत्पादकों को अधिशेष क्षमता की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।
- (v) एक्रेलिक फाइबर का कथित पाटन मेक्सिको से हुआ बताया गया है। परम्परागत रूप से, 1996-97 से पहले मेक्सिको से कोई आयात नहीं थे। यह 1997-98 में हुआ कि मेक्सिको एक अग्रणी निर्यातक के रूप में उतरा है। मेक्सिको से 1996-97 में शुद्ध रूप से होने वाला 378 मीट्रिक टन का आयात, 1997-98 के पहले 9 महीनों में अचानक बढ़कर एकाएक 1800 मीट्रिक टन हो गया। यह संभावित वृद्धि, यदि स्वदेशी उद्योग द्वारा प्रभावी ढंग से बाधित नहीं की गई होती, तो इससे वादियों को सीधी क्षति होती।
- (vi) पाटित आयात से हुई क्षति के लिए वादियों के दावे निम्नलिखित कारकों पर आधारित हैं :—
- (क) मेक्सिको से वार्षिक आयातों में वृद्धि।
- (ख) मेक्सिको के आयातों की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि।
- (ग) उत्पादन लागत की तुलना में वादियों द्वारा बेचे जाने वाले माल का बिक्री मूल्य काफी कम रहा है जिससे भारी आर्थिक हानि हुई है।
- (घ) इतना यथेष्ट लाभ नहीं हुआ कि ऋणों का भुगतान किया जा सके तथा शेयरधारकों को लाभांश दिया जा सके।
- (ङ) स्टॉक बहुत जमा हो गया है, विशेष रूप से इण्डियन एक्रेलिक लिमिटेड के पास।
- (च) लगातार पाटन एवं फलस्वरूप होने वाली भारी हानि और बुरे बाजार हालात के कारण उत्पन्न दुस्साध्य वित्तीय अवरोधों के कारण उद्योग, अपने विस्तारण में कठिनाई का अनुभव कर रहा है।
- (छ) वादीगण, एक्रेलिक फाइबर के प्रयोग के लिए नए-नए क्षेत्र तलाशने की दिशा में शोध एवं विकास के लिए धन जुटा पाने की स्थिति में नहीं है।
- (ज) स्वदेशी एक्रेलिक फाइबर उद्योग में लगभग रु. 1000 करोड़ का पूंजी निवेश है। मेक्सिको से होने वाले आयात

के कारण बाजार में कीमतों में भारी गिरावट आई है और पूंजी निवेश की राशि को देखते हुए कीमतें इतनी ऊंची नहीं उठ सकी हैं जितना कि उन्हें उठाना चाहिए था।

ग. 3. निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

I. आयातकों के विचार

1. किसी न किसी बहाने से एक्रेलिक फाइबर के स्वदेशी उत्पादक, विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता के मानकों को खरे उतरने वाले एक्रेलिक फाइबर निर्माताओं के खिलाफ पाटनरोधी कार्यवाही करते चले आ रहे हैं। इससे जाहिर होता है कि भारतीय उत्पादक, विश्व बाजार के लिए भारत में उत्पादित एक्रेलिक फाइबर से बनने वाले उत्पादों की विश्व स्तरीय गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में कितने अकुशल हैं।

2. एक्रेलिक फाइबर के मुख्य कच्चे माल अर्थात् एक्रिलोनाइट्राईल का मूल्य लगातार गिर रहा है। नीचे अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों का यह भी एक कारण है।

मैसर्स भिवानी टैक्सटाईल्स मिल्स एवं मैसर्स नाहर स्पिनिंग मिल्स ने कहा है कि उन्होंने जॉच अधि के दौरान मेक्सिको से एक्रेलिक फाइबर का आयात नहीं किया है।

II. निर्यातकों के विचार

फाईबास नेशनल द मैक्सिको

निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार प्राधिकारी से वांछित सूचना देने की मांग का इसने कोई जवाब नहीं दिया।

सैल्यूलोसा वार्ड डेरीवादोस

इस निर्यातक ने भी प्राधिकारी द्वारा भेजी गयी प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया है। प्राधिकारी को लिखे गए अपने एक पत्र में उन्होंने केवल इतना ही कहा है कि भारत को उन्होंने 100 टन से भी कम एक्रेलिक फाइबर निर्यात किया है और इस प्रकार उनका मामला नियमानुसार अत्यंत शुद्ध हो जाता है।

ख. उठाए गए मुद्दों की जांच

4. वादियों, निर्यातकों तथा आयातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी अभिवेदनों की जांच की गई और उन पर यहां नीचे, उपयुक्त स्थानों पर विचार किया गया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद

5. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सिकुड़ने और न सिकुड़ने वाला, दोनों ही प्रकार का एक्रेलिक फाइबर है। एक्रेलिक फाइबर, एक्रिलोनाइट्राईल के वजन के अनुसार 85 प्रतिशत तक तैयार सिंथेटिक पॉलीमर है। 'एक्रेलिकफाइबर' शब्द में रेशा, दो और पूनी का अर्थ शामिल है। एक्रेलिक फाइबर की अभिसीमा 1.5 डिनीयर से 8.0 तक की होती है।

एक्रेलिकफाइबर कस्टम टैरिफ अधिनियम, 1975 क प्रकरण 55, एचएस कोड संख्या 5501, 5503 के अधीन वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और किसी भी तरह से वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकर नहीं है।

च. समान वस्तुएं

6. एक्रेलिक फाईबर का उत्पादन और बिक्री विभिन्न विनिर्देशों के अनुसार होती है जो फाईबर की गुणधर्मिता को बताते हैं और जो नाना प्रकार के अन्त्य-प्रयोगों में फलीभूत होती हैं। जहां तक एक्रेलिक फाईबर की विभिन्न किस्मों के उत्पादक की प्रक्रिया, उपकरणों तथा तकनीक का सवाल है, इस दृष्टि से इनमें कोई विशिष्ट अंतर नहीं है। फाईबर (डेनियर) की हर प्रकार की श्रेणी सामान्यतया विभिन्न प्रकार के बाजार क्षेत्रों की मांग पूरी करती है और परस्पर स्थानापन्नीय है।

यह सिद्ध करने के लिए कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित एक्रेलिक फाईबर हर दृष्टि से मैक्सिको से निर्यात किये गए फाईबर की गुणवत्ता के समदर्श ही है, तकनीकी विनिर्देशों, उत्पादन प्रक्रियाओं, विधियों एवं प्रयोगों तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसी तमाम बातों को ध्यान में रखा गया है।

एक्रेलिक फाबर (इस्टेपल, टो तथा टाप्स) का उत्पादन एवं बिक्री 1.5, 2.0, 3.0 से 8.0 तक विभिन्न डेनियर्स में की जाती है तथा इसमें सिकुड़ने योग्य एवं न सिकुड़ने योग्य, दोनों ही किस्में शामिल हैं। उत्पादन की प्रक्रिया मौटे तौर पर विश्व भर में एक ही होती है। एक्रेलिक फाईबर का उत्पादन भीगे स्पन या सूखे स्पन द्वारा किया जाता है। एक्रोलोनॉइडाईल यह मूल कच्चा माल है जो एक्रेलिक फाईबर के उत्पादन में लगता है।

एक्रेलिक फाईबर ऊन का एक सगता विकल्प है जो खुद एक मंजगी वस्तु है। नाना प्रकार के वस्त्र बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है तथा इसके अन्य घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग भी हैं। तथापि, भारत में शोध एवं विकास सुविधाओं की कमी के कारण इसका प्रयोग सीमित ही है।

इस बात का कोई विवाद नहीं है कि नाना प्रकार के डेनियर्स में स्वदेशी उत्पादकों द्वारा तैयार किया गया एक्रेलिक फाईबर, आयातित फाईबर, से बहुत हद तक मिलती-जुलती विशेषताओं से युक्त है और व्यावसायिक तथा तकनीकी, दोनों ही दृष्टियों से संबद्ध देश से आयात किये गए एक्रेलिक फाईबर का विकल्प है। नियम 2 (डी) के अर्थ में, स्वदेशी उद्योगों द्वारा उत्पादित एक्रेलिक फाईबर मैक्सिको से निर्यात किये गए उत्पाद के समदर्श ही एक समान वस्तु के रूप में स्वीकार किया गया है।

छ. स्वदेशी उद्योग

7. मैसर्स इण्डियन एक्रेलिक्स लिमिटेड, चण्डीगढ़ पशुपति एक्रिलान लिमिटेड, नई दिल्ली तथा कंसोलिडेटेड फाईबर एंड कैमीकल्स लिमिटेड, कलकत्ता ने मिलकर संयुक्त रूप से अपनी याचिका दायर की है। वादी ने कहा है कि इण्डियन पेट्रोकेमीकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, बड़ौदा एक्रेलिक फाईबर का उत्पादन करने वाली एक और कम्पनी है। आवेदक ने यह भी कहा है कि पाँचवीं कम्पनी मैसर्स जे. के. सिंथेटिक्स लिमिटेड फिलहाल उत्पादन नहीं कर रही है। यह भी कहा गया है कि इन पाँचों ईकाइयों की संवेत उत्पादन क्षमता 108,000 मी. टन है। वर्ष 1997-98 में एक्रेलिक फाईबर का कुल उत्पादन 79,469 मीट्रिक टन बताया गया है। यदि जे. के. सिंथेटिक्स लिमिटेड का उत्पादन भी शामिल किया जाए तो कुल उत्पादन 80,062 मी. टन होगा। वादी कम्पनियों का उत्पादन 58,669 मी. टन था। इसमें आवेदक कम्पनियों का कुल हिस्सा 58669 मीट्रिक टन रहा है।

याचिका का समर्थन एक्रेलिक फाईबर फोरम ने किया है जिसमें तमाम आवेदक कम्पनियां सदस्य हैं। इस प्रकार स्वदेशी उत्पादन में वादी का योगदान 25 प्रतिशत से भी अधिक का है और इसलिए नियमानुसार

उसे स्वदेशी उद्योग की ओर से याचिका दाखिल करने का अपेक्षित आधार प्राप्त है।

ज. पाटन

8. धारा 9 (1) के अन्तर्गत किसी वस्तु के सामान्य मूल्य का अर्थ है :—

समान वस्तु के सामान्य व्यापार में तुलनीय मूल्य, जबकि वह वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत हेतु तैयार की गयी हो और जो उपधारा (6) के अन्तर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारित हो, या

(1) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के अपने स्वदेशी बाजार में व्यापार की सामान्य स्थिति में समान वस्तु की कोई बिक्री न होती हो अथवा विशिष्ट बाजार दशा या निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में खपत की मात्रा काफी गिर जाए, तब ऐसी बिक्री से उचित तुलना न हो सकने की स्थिति में सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा :—

(क) समान वस्तु के तुलनात्मक मूल्य का निर्धारण उपधारा (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार ही किया जाए अगर समान वस्तु निर्यातक देश, क्षेत्र या किसी उचित अन्य तीसरे देश द्वारा निर्यात होकर पहुंची हो; अथवा

(ख) प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ के लिए उचित बढोत्तरी सहित मूलता के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत जो उपधारा (6) के अधीन बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित है;

बशर्ते कि मूलता के देश के अलावा अन्य किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में या वस्तु को निर्यातक देश के माध्यम से केवल भेजा गया हो या ऐसी वस्तु का निर्यातक देश में उत्पाद नहीं होता या निर्यातक देश में इसका कोई तुलनीय मूल्य नहीं है, इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।

प्राधिकारी ने ऊपर दी गयी धारा की शर्तों के अनुसार विषयगत देश के निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं। तथापि, किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया। अतः सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में निर्यातकों द्वारा कोई दावे नहीं किए गए। अतः प्राधिकारी को, सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में वादी द्वारा दी गयी सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना और उपलब्ध सरकारी आंकड़ों पर निर्भर रहना पड़ा है।

झ. सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य की जाँच

9. प्राधिकारी के पास उपलब्ध सूचना के आधार पर

प्राधिकारी के पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर यह देखा गया कि एक्रेलिक फाईबर्स के विभिन्न डेनियर्स, लागत या मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं दिखाते और उसी रेंज में हैं। इसके अलावा विभिन्न किस्मों के बीच पर्याप्त स्थानापन्नता है। अतः प्राधिकारी ने फाईबरों (जिन्हें विचाराधीन उत्पाद कहा गया है) को इन जाँचों के लिए एकत्र कर दिया गया है।

(i) सामान्य मूल्य

प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य, मैक्सिको के स्वदेशी बाजार में एक्रेलिक

फाईबर के मूल्यों के आधार पर माना है, जैसा कि मैक्सिको में स्वदेशी बाजार में बिक्री के लिए बनाए गए बीजक से देखा जा सकता है। यह बीजक वादी द्वारा संलग्न किया गया है। इसमें मैक्सिकन डालर 20.00 प्रति किलो ग्राम का मूल्य दिया गया है। लागू होने वाली मुद्रा विनिमय दर (सामान्यतया 8.10 स्थानीय मैक्सिकन डालर, 1.00 अमरीकी डालर के बराबर है) से सामान्य मूल्य अमरीकी डालर 2.47 प्रति किलो ग्राम आता है। अन्तरदेशीय भाड़े (स्थानीय मैक्सिकन दर के अनुसार अमरीकी डालर 0.02/किलो ग्राम) और पैकिंग (0.5 प्रतिशत या अमरीकी डालर 0.20/किलोग्राम) अधिकारी द्वारा अनुमत हैं। समायोजन के बाद सामान्य मूल्य अमरीकी डालर 2.25 प्रति किलो ग्राम आता है।

(ii) निर्यात मूल्य

निर्यात मूल्य डीजीसीआईएस द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर तय किया गया है जो रु. 58.93 प्रति किलो ग्राम या अ. डा. 1.58 का निर्यात मूल्य बताता है। वादी ने मैक्सिको में अ. डा. 1000 का स्थानीय परिवहन, अ. डा. 3900 का समुद्री भाड़ा तथा अ. डा. 261.87 के सीमाशुल्क खर्च दिखाते हुए कोटेशन प्रस्तुत की है जो 38 टन एक्रेलिक फाईबर ले जाने की क्षमता वाले 40" कंटेनर के लिए है। इन सबके लिए समायोजन अ. डा. 0.14 प्रति किलो ग्राम आता है इसके लिए प्राधिकारी ने अनुमति दी है।

उपरोक्त समायोजनों को अनुमत करने के बाद फैक्टरी-एतर मूल्य अ. डा. 1.44 प्रति किलो ग्राम बनता है।

(iii) पाटन मार्जिन

अ. डा. 2.25 प्रति किलो ग्राम के सामान्य मूल्य एवं अ. डा. 1.44 प्रति किलो ग्राम के फैक्टरी-एतर निर्यात मूल्य मानते हुए प्राधिकारी द्वारा तय किया गया पाटन मार्जिन अ. डा. 0.81 प्रति किलो ग्राम बनता है (जो निर्यात मूल्य का 56.25 प्रतिशत है)।

अ. क्षति

10. पूर्वोक्त नियम 11 के अधीन अनुलग्नक 11 के अनुसार जब क्षति का होना पता चलता है तो ऐसी जानकारी में स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति निश्चित की जाती है। इस कार्य में पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए स्वदेशी बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव और समान वस्तु के स्वदेशी उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामतया प्रभावों से संबंधित सभी तथ्यों पर विचार किया जाता है। मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए यह जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान वस्तु के मूल्य की तुलना में, पाटित आयातों द्वारा प्रयाप्त नीचा मूल्य है या ऐसे आयातों का प्रभाव, मूल्यों में वृद्धि को रोकने या मूल्यों को एक विशेष सीमा तक दबाने के लिए किया गया है। यदि ऐसा नहीं किया गया होता तो मूल्यों में महत्वपूर्ण स्तर तक वृद्धि होती।

पूर्वोक्त नियम 11 के अधीन अनुलग्नक II (iii) में और आगे यह दिया गया है कि जहां एक देश से अधिक देशों से एक उत्पाद के आयात के साथ-साथ पाटनरोधी जांच के अधीन हों तो नामनिर्दिष्ट प्राधिकारी, ऐसे आयातों के प्रभावों का संचित आकलन तब ही करेगा जबकि यह निश्चित करे कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन मार्जिन 2 प्रतिशत से अधिक है और निर्यात मूल्य की प्रतिशतता के रूप में व्यक्त किया गया है तथा प्रत्येक देश से निर्यातों की मात्रा समान वस्तुओं के आयातों का 3 प्रतिशत या अलग-अलग देशों का निर्यात 3 प्रतिशत से कम है, संचित रूप से आयात, समान वस्तु के आयातों के 7 प्रतिशत से अधिक

होते हैं तथा आययातित वस्तु एवं समान स्वदेशी वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की दशाओं के प्रकाश में आयातों के प्रभाव का संचित आकलन उचित है।

प्राधिकारी ने नोट किया है कि पाटन का मार्जिन तथा विषयगत देशों से आयातों की मात्रा, ऊपर निर्धारित की गयी सीमाओं से अधिक है।

भारत में स्वदेशी उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने ऐसे और संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्रियों की मात्रा, स्टॉक, लाभकारिता, शुद्ध बिक्री प्राप्ति, पाटन का घनत्व एवं मार्जिन आदि। यह पूर्ववर्ती नियम के अनुलग्नक II (iv) के अनुसार होंगे।

(क) आयातों की मात्रा

एक्रेलिक फाईबर के कुल आयात 1995-96 और 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 10,482 मीटरिक टन, 21,114 मीटरिक टन तथा 26,422 मीटरिक टन थे। इस प्रकार 1995-96 की तुलना में 96-97 में यह 101 प्रतिशत एवं 1996-97 की तुलना में 1997-98 में ये 25 प्रतिशत अधिक थे। यह वृद्धि 1995-96 की तुलना में 1997-98 में 152 प्रतिशत थी। इस प्रकार जांच की अवधि के दौरान आयातों की मात्रा काफी बढ़ी है।

मैक्सिको से आयातों की मात्रा 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 161 मीटरिक टन, 378 मीटरिक टन तथा 2341 मीटरिक टन थी। आयातों की मात्रा 95-96 की तुलना में 96-97 में 135 प्रतिशत तथा 96-97 की तुलना में 97-98 में बढ़कर 519.3 प्रतिशत हो गयी। 1995-96 की तुलना में 97-98 में वृद्धि 1354 प्रतिशत थी। इस प्रकार पिछले वर्षों में मैक्सिको से आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

अन्य देशों से आयातों की मात्रा 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 10321 मीटरिक टन, 20736 मीटरिक टन तथा 24443 मीटरिक टन थी। कुल आयातों में मैक्सिको की हिस्सेदारी 1995-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 1.5 प्रतिशत, 1.8 प्रतिशत तथा 9.5 प्रतिशत थी।

(ख) उत्पादन तथा क्षमता का उपयोग

यह देखा गया है कि वादी कम्पनियों (अर्थात् इण्डियन एक्रेलिक, पशुपति एक्सीलोन तथा कंसोलिडेटीड) की उत्पादन क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता का उपयोग निम्नलिखित के अनुसार थे :-

वर्ष	क्षमता (मी.टन)	उत्पादन	क्षमता का उपयोग
1995-96	50000	42309	84.62 प्रतिशत
1996-97	55000	55808	101.47 प्रतिशत
1997-98	55000	58669	106.67 प्रतिशत

पशुपति की क्षमता का उपयोग 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 76 प्रतिशत, 98 प्रतिशत तथा 103 प्रतिशत था। इण्डियन एक्रेलिक्स की क्षमता का उपयोग 95-96, 96-97 तथा 97-98 में 93 प्रतिशत, 107 प्रतिशत तथा 109 प्रतिशत था जबकि कंसोलिडेटीड फाईबरस का क्षमता उपयोग 1995-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 82.89 प्रतिशत, 103 प्रतिशत तथा 108 प्रतिशत था। इस प्रकार वादी कम्पनियां 80 प्रतिशत से अधिक का क्षमता उपयोग करती रही हैं। यद्यपि उच्चतर क्षमता उपयोग से बादियों को उत्पादित प्रति यूनिट बंधे खर्च पर कमी करने में मदद मिली है, इससे स्टॉक की स्थिति बढ़ी है जिसके परिणामस्वरूप बादियों को फाईबर के उत्पादन की लागत से कम मूल्यों पर आपात बिक्री करनी पड़ी है। आपात बिक्रियों के कारण बादियों को भारी वित्तीय हानि हुई है।

उत्पादन में 1995-96 की तुलना में 1996-97 में 31.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि संस्थापित क्षमता में वृद्धि 10 प्रतिशत की हुई है। संस्थापित क्षमता 1997-98 में उसी स्तर पर रही और उत्पादन केवल 5 प्रतिशत बढ़ा।

यह कहा गया है कि एकेलिक फाइबर के उत्पादन में लगातार संसाधन तकनीक का प्रयोग होता है तथा वादियों के सामने इसके सिवाय कोई विकल्प नहीं होता कि संयंत्र के एक बार चालू हो जाने पर अधिकतम उत्पादन किया जाए। प्रतिबंधित उत्पादन के परिणामस्वरूप, सामग्री एवं उपयोगिताओं के व्यर्थ जाने तथा उत्पादन के प्रति यूनिट ऊपरी खर्च बढ़ने के कारण उत्पादन की यूनिट लागत में वृद्धि होगी। परिणामतया सभी कम्पनियों ने अधिकतम उत्पादन सुनिश्चित किया है।

(ग) बिक्री तथा बाजार हिस्सेदारी

यह देखा गया है कि 1995-96, 96-97 तथा 97-98 में एकेलिक फाइबर की मांग क्रमशः 53603 मी. टन, 76614 मी.टन तथा 83461 मी.टन थी। कुल मांग में आयातों की हिस्सेदारी 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 19.55 प्रतिशत, 28.5 प्रतिशत तथा 31.6 प्रतिशत थी। बादी कम्पनियों की भागेदारी 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 80.44 प्रतिशत, 71 प्रतिशत और 68.34 प्रतिशत थी। इस प्रकार कुल मांग में आयातों का हिस्सा बढ़ रहा है जबकि भारतीय उद्योग का हिस्सा कम हो रहा है। उचित मूल्य से काफी नीचे मूल्य पर एकेलिक फाइबर की बिक्री के परिणामस्वरूप वादियों को भारी हानि हुई है। रुपयों में प्रति किलोग्राम बिक्री मूल्य 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 100.01, 89.04 तथा 82 थी। अतः यूनिट बिक्री मूल्य गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

(ग-1) अंतिम स्टॉक

यह देखा गया है कि वादियों का अंतिम स्टॉक 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 367 मी.टन, 2085 मी.टन तथा 3693 मी. टन था। अंतिम स्टॉक में 95-96 की तुलना में 96-97 में 468 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा ये 96-97 की तुलना में 97-98 में 62.60 प्रतिशत अधिक थे। यह देखा गया है कि 3393 मी. टन के अंतिम स्टॉक में से 1649 मी. टन पशुपति एक्सीलोन के पास, 1408 मी. टन इण्डियन एकेलिक के पास तथा 336 मी. टन कंसोलिडेटीड फाइबर के पास था। यह अभिवेदित किया गया है कि एकेलिक फाइबर उत्पादन प्रक्रिया में शार्ट साइकिल समय लगता है और यह विचित्र रूप से एक हफ्ते में कम का होता है। इस बात का दावा किया गया है कि विश्व में कोई भी उत्पादक कुछ दिनों से ज्यादा का स्टॉक नहीं रखता। बादी कम्पनियों द्वारा रखा गया औसत स्टॉक 1.4 महीने का उत्पादन बनता है। वादियों को माल सूची का वर्तमान स्तर रखने में कठिनाई हो रही है और इस बात की पूरी संभावना है कि उन्हें आपात बिक्री करनी पड़े।

(घ) मूल्य कम रखना (अंडरकटिंग) तथा मूल्य अवसाद

बादी कम्पनियों ने कहा है कि विपयगत देशों के आयात, स्वदेशी उत्पादकों द्वारा बेचे जा रहे फाइबर के मूल्यों की अंडरकटिंग कर रहे हैं। उपभोक्ता उद्योग ने इन देशों से सस्ते आयातों के बहाने स्वदेशी उद्योग को मूल्य घटाने के लिए विवश कर दिया है। पाटित आयातों से बादीगणों पर भारी छूट देने का दबाव हमेशा बना रहता है। एकेलिक फाइबर उत्पादन की लागत बढ़ने के बावजूद भारतीय एकेलिक फाइबर उद्योग अपने बिक्री मूल्य नहीं बढ़ा सका है। विपयगत देशों से पाटित आयातों में भारतीय बाजार में फाइबर के मूल्यों को दबा दिया है और वादियों को भारी हानि पहुंचायी है। पीजीसीआईएस के आंकड़ों से यह देखा गया है कि मार्च, 98

के दौरान आयात रु. 55.8 प्रति किलोग्राम के न्यूनतम मूल्य पर थे। वर्ष 1996-97 में एकेलिक फाइबर की प्रति किलोग्राम औसत प्राप्ति रु. 89.04 प्रति किलोग्राम थी, जो जाँच की अवधि के दौरान गिरकर रु. 82 प्रति किलोग्राम हो गयी। यह भी दिखाया गया है कि वर्ष 1995-96 तथा 96-97 के दौरान बादी कम्पनियों की हानियां क्रमशः रु. 39.62 करोड़ और रु. 13.33 करोड़ की रहीं। वर्ष 1997-98 में बादी कम्पनियों ने रु. 4.06 करोड़ का मामूली लाभ कमाया जबकि यह कहा गया है कि उद्योग को 97-98 में रु. 100 करोड़ से अधिक का न्यूनतम लाभ होना चाहिए था। तथापि, यह देखा गया है कि विभिन्न उत्पादक, विभिन्न बिक्री मूल्य दे रहे हैं और विभिन्न कम्पनियों का लाभ तथा हानि अलग-अलग होते हैं। पशुपति एक्सीलोन, कंसोलिडेटीड फाइबरस तथा इण्डियन एक्सीलक्स द्वारा लिए गए बिक्री मूल्य क्रमशः रु. 87 प्रति किलोग्राम, रु. 84 प्रति किलोग्राम तथा रु. 78 प्रति किलोग्राम थे। इस मूल्य स्तर पर पशुपति एक्सीलोन ने रु. 11 करोड़ का लाभ कमाया, कंसोलिडेटीड फाइबरस ने रु. 17.28 करोड़ की हानि उठाई और इण्डियन एक्सीलक्स ने रु. 10.34 करोड़ का लाभ कमाया। यह सब जाँच की अवधि के दौरान हुआ था। मूल्यहास के लिए उच्चतर प्रावधान को देखते हुए शुद्ध लाभ कम था।

(ङ) क्षमता का विस्तार

यह कहा गया है कि इण्डियन एकेलिकस ने अपने संयंत्र को इस प्रकार डिजाईन किया है कि इसकी क्षमता खण्डों में, 12000 मी. टन से बढ़ाकर 35000 मी. टन हो जाए। तथापि, कम्पनी वित्तीय कठिनाइयों और बाजारी मंदी, दोनों ही के कारण इसमें कठिनाई अनुभव कर रही है और उनका विस्तार का काम बहुत धीरे-धीरे चल रहा है। वृद्धि के मायनों में, आयातों ने भारतीय उद्योग की भारी क्षति की है।

(च) निधियां एकत्र करने में असमर्थता

यह दावा किया गया है कि वित्तीय संस्थाओं से लिए गए ऋणों और ऐसे ऋणों पर व्याज वापिस करने में बादी कम्पनियों को कठिनाई हो रही है इसके कारण कम्पनियां अन्य वित्तीय संस्थाओं से और आगे ऋण नहीं ले पा रही हैं तथा इससे विस्तार की उनकी भावी योजनाएं प्रभावित हो रही हैं।

(छ) अनुसंधान तथा विकास कार्यों के लिए खर्च करने में असमर्थता

विश्व भर में एकेलिक फाइबर के लेख उपयोग किये जाते हैं जिनमें हौजरी की वस्तुएं, घरेलू फर्नीचिंग (कालीन बाजार) तथा औद्योगिक उपयोग भी शामिल हैं। फाइबर को कुछ विशेष क्षेत्रों में भी जैसे अपहोल्स्ट्री में प्रयोग किया जा सकता है, तथापि इन क्षेत्रों में फाइबर के प्रयोग के लिए गहरे अनुसंधान और विकास में निवेश की आवश्यकता है जो भारतीय उद्योग की इस अवस्था में बहुत ही कठिन है जहां कि लगातार पाटन के कारण इसका अस्तित्व ही दाँव पर लगा है।

2. क्षति पर निष्कर्ष

11. पूर्वोक्त को देखते हुए यह कहा जाता है कि :—

- (क) विपयगत देशों से आयातों की मात्रा नितांत अर्थों में बढ़ी है।
- (ख) बादी कम्पनियों के बाजार हिस्से में गिरावट आयी है;
- (ग) स्वदेशी उद्योग को अपने उचित मूल्य से नीचे के

मूल्यों पर बिक्री के लिए बाध्य होना पड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप क्षति हुई है या निवेशों पर बहुत कम लाभ मिला है;

(घ) आयात, स्वदेशी उद्योग के मूल्य की अंडरकटिंग कर रहे हैं;

(ङ) स्वदेशी उद्योग का अंतिम स्टॉक बढ़ गया है;

(च) स्वदेशी उद्योग अपनी क्षमता बढ़ाने की स्थिति में नहीं है;

अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।

ठ. कारणात्मक संबंध

12. यह स्थापित करते हुए कि विषयगत देशों से आयातों द्वारा स्वदेशी उद्योग को वित्तीय क्षति हुई है, प्राधिकारी का मानना है कि मैक्सिको से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप वादी के बाजार हिस्से में गिरावट आई है तथा स्वदेशी उत्पाद के मूल्यों में अंडरकटिंग कर रहे हैं, जिससे स्वदेशी उद्योग को अपने उचित मूल्य से कम पर बिक्री करनी पड़ी है। परिणामतया स्वदेशी उद्योग उचित बिक्री मूल्य प्राप्त करने की स्थिति में नहीं था। अतः स्वदेशी उद्योग को, उक्त देश से पाटित आयातों के कारण आर्थिक क्षति हुई है।

ड. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

13. पाटनरोधी सीमाशुल्कों का प्रयोजन सामान्यतया पाटन को खत्म करना है जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है और भारतीय बाजार में एकमुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित करना है जो देश के सामान्य हित में है।

14. यह मानी हुई बात है कि पाटनरोधी सीमाशुल्कों का लगाया जाना, विषयगत माल का प्रयोग करते हुए बने उत्पादों के मूल्य स्तरों को प्रभावित कर सकता है तथा परिणामतया इन उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्द्धिता पर कुछ प्रभाव डाल सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी, विशेष रूप से जबकि पाटनरोधी सीमा शुल्क लेवी को उस राशि तक प्रतिबंधित रखा जाता है जहां तक स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति की पूर्ति होती है। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लगाने से पाटनरोधी ढंगों से प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को रोका जा सकेगा, इससे स्वदेशी उद्योग की गिरावट रुकेगी और एक्रेलिक फाईबर के उपभोक्ताओं को अधिक किस्में उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। पाटनरोधी उपाय लगाना किसी भी प्रकार से विषयगत देशों से आयातों को नहीं रोकेगा और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेगा।

15. स्वदेशी उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटन रोधी सीमा शुल्क की सीमा का पता लगाने के लिए प्राधिकारी ने स्वदेशी उद्योग हेतु भारत में एक्रेलिक फाईबर के उचित बिक्री मूल्य पर भरोसा किया है। यह स्वदेशी उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के अधिकतम स्तर पर उत्पादन की अधिकतम लागत पर विचार करते हुए किया गया है।

इ. लैंडिड मूल्य

16. आयातों के लैंडिड मूल्य का निश्चयन, एक्रेलिक फाईबर के निर्यात मूल्य के आधार पर किया गया है। यह सीमाशुल्कों के वर्तमान स्तर

तथा एक प्रतिशत लैंडिंग और दो प्रतिशत हैण्डलिंग खर्चों को जोड़कर, पाटन से संबंधित उपरोक्त पैरे में दिए गए विवरण के आधार पर निश्चित किया गया है।

ण. निष्कर्ष

17. पूर्वोक्त पर विचार करते हुए यह देखा गया है कि :—

(क) पैरा 5 में वर्णित, मैक्सिको मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाईबर का भारत को सामान्य मूल्य से नीचे पर निर्यात किया गया है जिसके कारण पाटन हुआ है;

(ख) भारतीय उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है;

(ग) विषयगत देशों से आयातों के कारण क्षति हुई है।

18. जाँच होने तक, विषयगत देश के मूल के या वहां से आयातित एक्रेलिक फाईबर के सभी आयातों पर, अंतिम निश्चयन होने तक, अनन्तिम तौर पर सीमाशुल्क लगाना आवश्यक समझा गया है।

19. इस पर विचार किया गया था कि क्या पाटन मार्जिन से कम का सीमाशुल्क, क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा। इस प्रयोजन के लिए आयातों के लैंडिड मूल्य की तुलना जाँच अवधि के लिए निश्चित स्वदेशी उद्योग के उचित बिक्री मूल्य के साथ की गयी थी। जहां कहीं भी अंतर, पाटनमार्जिन से कम था, वहां पर पाटनमार्जिन से कम के सीमा शुल्क की सिफारिश की गयी थी। तदनुसार अंतिम निश्चयन होने तक कस्टम टेरिफ एक्ट के कस्टम्स उपशीर्ष 5501.30 तथा 5503.30 के अन्तर्गत आने वाले तथा मैक्सिको मूल के या वहां से निर्यातित सभी एक्रेलिक फाईबर पर, केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी किये जाने वाली अधिसूचना की तारीख से, अनन्तिम पाटनरोधी सीमाशुल्क लगाने का प्रस्ताव है।

देश	उत्पादक का नाम	राशि (रु.)	राशि (रु.)
1	2	3	4
मैक्सिको	सभी निर्यातक	83.7	2.20

20. प्रयोजन के लिए आयातों का लैंडिड मूल्य, सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत सीमाशुल्क प्राधिकारी द्वारा लगाया जाएगा और इसमें कस्टम टेरिफ एक्ट, 1975 की धारा 3, 3 ए, 8 बी, 9 तथा 9 ए के अन्तर्गत लगाए गए सीमा शुल्कों के सिवाय सभी सीमा शुल्क शामिल होंगे।

त. भावी पद्धति

21. आरंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित किए जाने के बाद निम्नलिखित पद्धति अपनाई जाएगी :—

क. प्राधिकारी इन निष्कर्षों पर सभी हितबद्ध पार्टियों से उनके विचार आमंत्रित करेगा और अंतिम निष्कर्षों में उन्हें ध्यान में रखा जाएगा;

ख. ज्ञात संबद्ध निर्यातकों, आयातकों, वादी तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को अधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो इस अधिसूचना के प्रेषण की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार बता सकते हैं। कोई

और अन्य हितवद्ध पार्टी भी, इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार दे सकती है;

ग. प्राधिकारी, सभी पार्टियों को मौखिक अभिवेदन करने का अवसर प्रदान करेगा;

घ. प्राधिकारी, अंतिम निष्कर्षों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्य उद्घाटित करेगा।

रति विनय झा, नामनिर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE

NOTIFICATION

New Delhi, the 7th April, 1999

Subject: Anti-Dumping investigation concerning imports of Acrylic Fibre from Mexico—Preliminary Findings.

21/1/98/DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof :

A. PROCEDURE

1 The procedure given below has been followed with regard to the investigations :

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as authority), under the above rules, received a written petition from M/s. Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, M/s. Pasupati Acrylon Ltd., New-Delhi and M/s. Consolidated Fibre and Chemicals Ltd., Calcutta, alleging dumping of Acrylic fibre originating in or exported from Mexico.
- (ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was therefore considered as properly documented
- (iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate investigations against alleged dumped imports of acrylic fibre originating in or exported from Mexico. The Authority notified the Embassy of the subject country about the receipt of Dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub rule 5(5) of the Rules;
- (iv) The authority issued a public Notice dated 30th July, 1998, published in the Gazette of India, Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of Acrylic Fibre classified under Chapter-55 of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from Mexico.
- (v) The authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporters (whose details were made

available by the petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;

- (vi) The authority forwarded a copy of the Public Notice to the known importers (whose details were made available by the petitioner) of acrylic fibre and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- (vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of acrylic fibre;
- (viii) The Authority provided copies of the petition to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rule 6 (3) supra;
- (ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters, from Mexico, in accordance with Rule 6 (4);
 - * Fibras Nacional De Acrílico,
 - * Celulosa Y Derivados, S.A. De C.V.
 None of the exporters responded to the questionnaire in the prescribed format.
- (x) The Embassy of Mexico was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6 (2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them, alongwith a list of known exporters/producers.
- (xi) a questionnaire was sent to the following known importers of acrylic fibre in India calling for necessary information in accordance with Rule 6 (4):
 - * Vardhman Spg and Gen Mills Ludhiana
 - * Nahar Spinning Mills Ltd. Ludhiana
 - * Malwa Cotton Spinning Mills Ltd. Ludhiana
 - * Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd. New Delhi
 - * Winsome Textile Industries Ltd. Chandigarh
 - * Siddhartha Super Spinning Mills Ltd. New Delhi
 - * Bhiwani Textile Mills Haryana
 - * Adhinath Textile Ltd. Ludhiana
 - * Shruti Synthetics Ltd. Udaipur
 Response to the questionnaire was filled by the following:
 - * Bhiwani Textile Mills
 - * Nahar Spinning Mills Ltd.
 - * Winsome Textile Industries Ltd.
 - * Adinath Textiles Ltd.
- (xii) One of the exporting parties requested for extension of time to submit the responses, which was, upon good cause shown, allowed by the Authority.

- (xiii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (xiv) Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the Petitioner so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- (xv) ****in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- (xvi) The Authority conducted spot verification at the premises of the petitioners to the extent considered necessary.
- (xvi) Investigations were carried out for the period starting from 1st April, 1997 to 31st March, 1998.

B. PETITIONERS VIEWS

2. The Petitioner has raised the following major issues in their petition and in their subsequent submissions.

- (i) The Petitioner has claimed that acrylic fibre is being produced in India by the following companies:

Name of Company	Production (MT) 1997-98
(a) Indian Acrylics Ltd.	27,183
(b) Pasupati Acrylon Ltd.	18,485
(c) Consolidated Fibre and Chemicals Ltd.	13,001
(d) J. K. Synthetics Ltd.	—
(e) Indian Petrochemical Corporation	20,800

The Petitioner has stated that J.K. Synthetics Ltd. is presently not in operation. A letter was addressed by the Authority to the Department of Chemicals and Petrochemicals, Ministry of Chemicals and Fertilizers, seeking clarification on the status of M/s. J.K. Synthetics Ltd. It was clarified by the Department of Chemicals and Petrochemicals vide their letter dated 3rd February, 1999, that M/s J.K. Synthetics Ltd. is having a total installed capacity of 24000 MT of acrylic fibre at Kota and Jhalawar. The production of acrylic fibre by them came down to 593 Mt in 1997-98. Less production of acrylic fibre during 1997-98 was on account of lockout and working capital shortage at both the units which are not in operation at present.

The petitioner companies account for 73.27% of the total Indian production. Further, the petitioners are supported by the Forum of Acrylic Fibre Manufacturers. The petitioners therefore satisfy the standing to file the present petition on behalf of the domestic industry.

- (ii) It is stated that the Petitioner companies are dependent upon imported Acrylonitrile which is the

main raw material for the product. They are therefore subject to international vagaries.

- (iii) Domestic industry, it is claimed, has enough capacity to satisfy current and future demand. Efforts have been made by them to increase the level of awareness about the product under consideration amongst potential customers and in new areas of the country.
- (iv) Acrylic fibre is being produced in a number of countries throughout the world in large capacities which exceed the global demand for the product. Many producers are consequently faced with surplus capacity.
- (v) Alleged dumping of acrylic fibre is stated to take place from Mexico. Traditionally, there were no imports from Mexico prior to 1996-97. It was only in 1997-98 that Mexico emerged as a leading exporter. The sudden increase in imports from Mexico in absolute terms from 378mt in 1996-97 to 1800mt in the first nine months of 1997-98, and the potential increase, which would have occurred had the domestic industry not effectively countered the same, has directly caused injury to the Petitioners.
- (vi) The claim of injury to the Petitioners from the dumped imports is based on the following factors :
 - (a) Increase in actual imports from Mexico.
 - (b) Increase in market share of Mexican imports.
 - (c) Selling prices of the Petitioners are significantly lower than the cost of production, resulting in huge financial losses.
 - (d) Profits are not sufficient to repay debts and issue dividends to shareholders.
 - (e) Stocks have touched a high level, particularly with Indian Acrylics Ltd.
 - (f) The industry is finding it difficult to expand in view of severe financial constraints arising out of sustained dumping resulting in losses and poor market conditions.
 - (g) The Petitioners are unable to find research and development efforts directed towards finding new areas of use of acrylic fibre.
 - (h) Investments in the domestic acrylic fibre industry are to the extent of Rs. 1000 crores. The imports from Mexico have caused significant price depression in the market and prices have not increased to the extent they should have considering the investments made.

C. 3. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

I Importers Views

- 1. On one pretext or other, Indian manufacturers of acrylic fibre have been initiating anti-dumping proceedings against manufactures of international quality acrylic fibres in the world. This shows the

in-efficiency of Indian manufacturers who cannot meet international quality standards for end-products required to be produced in India for international markets.

2. The price of the main raw material of acrylic fibre i.e. Acrylonitrile is falling continuously. This is also a reason for lower international prices.

M/s. Bhiwani Textile Mills and M/s. Nahar Spinning Mills have stated that they have not imported acrylic fibre from Mexico during the period investigated

II. Exporters View

FIBRAS NATIONALE DE MEXICO

This exporter has not responded to the Authority's request for information as per the prescribed questionnaire.

CELULOSA Y DERIVADOS

This exporter has also not responded to the questionnaire sent by the Authority. In a letter addressed to the Authority they have stated that the volume of acrylic fibre exported by them into India is less than 100 tons and as such their case would fall under the rule of "de-minimus".

D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED

4. The submissions made by the petitioners, exporters and importers have been examined and have been dealt with at appropriate places hereunder.

E. PRODUCT UNDER INVESTIGATION

5. The product under consideration in the present investigation is Acrylic Fibre in both shrinkable and non-shrinkable forms. Acrylic fibre is a synthetic polymer composed of at least 85 per cent by weight of acrylonitrile. The term acrylic fibre includes Staple, Tow and Tops. The range of acrylic fibre is stated to extend from 1.5 Denier to 8.0 Denier.

Acrylic fibre is classified under Chapter 55 of the Customs Tariff Act, 1975, under tariff classification H.S. Code No. 5501, 5503. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

F. LIKE ARTICLES

6. Acrylic Fibre is produced and sold in various specifications which depict the properties of the fibre and may result in varying end uses. There is however no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of different varieties of acrylic fibre. Each range of fibre (denier) caters broadly to different market segments and are substitutable with one another.

In order to establish that the acrylic fibre produced by the domestic industry is a like article to the fibre exported from Mexico, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered.

Acrylic fibre (staple, tow and tops) is produced and sold in different deniers ranging from 1.5, 2.0, 3.0 to 8.0 and consist of both shrinkable and non-shrinkable forms. The process of manufacture is broadly similar throughout the world. Acrylic fibre is produced either through wet spun or

dry spun technology. Acrylonitrile is the basic raw material that goes into the production of acrylic fibre.

Acrylic fibre is an economical substitute of wool which is more expensive. It is used in making apparel and has household and industrial applications too. In India however, the uses are limited due to lack of R&D facilities.

There is no argument disputing that acrylic fibre produced by the domestic industry in various deniers has characteristics closely resembling the imported fibre and is substitutable by the acrylic fibre imported from the subject country both commercially and technically. Acrylic fibre produced by the domestic industry has been treated as like article to the product exported from Mexico, within the meaning of Rule 2(d).

G. DOMESTIC INDUSTRY

7. The petition has been jointly filed by M/s Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, Pasupati Acylon Ltd., New-Delhi and Consolidated Fibre and Chemicals Ltd., Calcutta. It is stated by the petitioner that Indian Petrochemical Corporation Ltd., at Vadodara is the other company producing acrylic fibre. The petitioner has stated that the fifth company M/s J. K. Synthetics Ltd., is presently not in operation. It is also stated that these five units have a combined capacity of 108,000 MT. The total production of acrylic fibre in 1997-98 is stated to have been 79,469 MT. If the production of M/s J. K. Synthetics Ltd. is taken into account, the total production would be 80,062 MT. The production of the petitioner companies was 58,669 MT.

The petition has been supported by the Forum of Acrylic Fibre Manufacturers wherein all the petitioner companies are members. Thus the petitioner accounts for more than 25% of domestic production and therefore has the required standing to file the petition on behalf of domestic industry under the rules.

H. DUMPING

8. Under Section 9A(1), normal value in relation to an article means :

The comparable price in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

- (i) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low value of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either :

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

- (b) the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The Authority sent questionnaires to the exporters from the subject country in terms of the section cited above. However none of the exporters responded to the questionnaire. Therefore there are no claims made by the exporters with regard to normal value and export price. The Authority has therefore been constrained to rely upon best available information with regard to normal value and export price as provided by the petitioner and as available in official statistics.

I. EXAMINATION OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE

9. BASED ON AVAILABLE INFORMATION BY THE AUTHORITY

On the basis of the facts available with the Authority, it is observed that the various deniers of Acrylic Fibres do not display any significant difference in terms of the costs or prices and are in the same range. Moreover, there is a considerable amount of substitutability among the different varieties. The Authority has therefore, grouped all fibres (described as product under consideration) for these investigations.

(i) NORMAL VALUE

The Authority has considered normal value on the basis of the prices of acrylic fibre in the domestic market of Mexico as evidenced by an invoice raised for sale in the domestic market in Mexico, enclosed by the petitioner indicating domestic prices at Mexican \$ 20.00 per kg. Considering the applicable exchange rate (generally, 8.10 local Mexican \$ are equivalent to USD 1.00) the normal value comes to US \$ 2.47 per kg. Adjustments on account of inland freight (USD 0.02/kg as per local Mexican quotation) and packing (at the rate of 0.5% or USD 0.20/kg) are allowed by the Authority. After adjustments the normal value comes to US \$ 2.25 per kg.

(ii) EXPORT PRICE

The export price has been determined on the basis of data published by DGCIS, which indicates an export price of Rs 58.93 per kg or USD 1.58. The petitioner has furnished a quotation showing local transportation in Mexico at US \$ 1000, ocean freight at US \$ 3900 and Customs expenses at US \$ 261.87 for 40" container with a capacity to carry 38

tons of acrylic fibre. The adjustments on these accounts comes to US \$ 0.14 per kg which is allowed by the Authority.

The ex-works price after allowing the above adjustments works out to US \$ 1.44 per kg.

(iii) DUMPING MARGIN

Considering the normal value at US \$ 2.25 per kg and the ex-works export price at US \$ 1.44 per kg., the dumping margin determined by the Authority comes to US \$ 0.81 per kg (which is 36.25% of export price).

J. INJURY

10. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article....." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent, the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from the subject country are more than the limits prescribed above.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

(a) Quantum of Imports

The total imports of acrylic fibre were 10,482 MT, 21,114 Mt and 26,422 Mt during 95-96, 96-97 and 97-98. Thus the increase was 101% in 1996-97 over 95-96 and 25% in 97-98 over 96-97. The increase was 152% in 97-98 over

95-96. Thus the quantum of imports have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from Mexico was 161 mt, 378 mt and 2341 Mt in 95-96, 96-97 and 97-98. The quantum of imports have gone up from 135% in 96-97 over 95-96 to 519.3% in 97-98 over 96-97. The increase was 1354% in 1997-98 over that of 1995-96. Thus there has been a significant rise in imports from Mexico over the years.

The quantum of imports from other countries was 10321 Mt, 20736 Mt and 24443 Mt in 1995-96, 96-97 and 97-98. The share of Mexico in total imports was 1.5%, 1.8% and 9.5% in 1995-96, 96-97 and 97-98 respectively.

(b) Production and Capacity Utilisation

It is observed that the production capacity, production and capacity utilisation of the petitioner companies (viz., Indian Acrylic, Pasupati Acrylon and Consolidated) were as under :

Year	Capacity(MT)	Production(MT)	Capacity Utilisation
1995-96	50000	42309	84.62%
1996-97	55000	55808	101.47%
1997-98	55000	58669	106.67%

The capacity utilisation of Pusupati was 76%, 98% and 103% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The capacity utilisation of Indian Acrylics was 93%, 107% and 109% in 95-96, 96-97 and 97-98 while the capacity utilisation of Consolidated Fibres was 82.89%, 103% and 108% in 95-96, 96-97 and 97-98. The petitioner companies have therefore been operating at a capacity utilisation of more than 80%. Although the higher capacity utilisation has helped the petitioners to reduce their incidence of overhead expenditure per unit of the fibre produced, it has resulted in increasing stock situation, which in turn resulted in distress selling by the petitioners at prices below cost of producing the fibre. Distress selling resulted in heavy financial losses to the petitioners. The increase in production in 1996-97 was 31% over that of 95-96 whereas the growth in installed capacity was 10%. Installed capacity remained at the same level in 97-98 and production increased by 5% only.

It is stated that the production of acrylic fibre involves continuous process technology and the petitioners have no option but to maximise production once the plant is started. Restricting production would result in increase in unit cost of production by way of material and utilities wastage and higher incidence of overhead costs per unit of production resultantly all the companies have ensured maximum production.

(c) Sales and Market Share

It is observed that demand of acrylic fibre was 53603 MT, 76614 MT and 83461 MT in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of imports in total demand was 19.55%, 28.5% and 31.6% in 95-96, 96-97 and 97-98, respectively. The share of the petitioner companies were

80.44%, 71% and 68.34% respectively in 95-96, 96-97 and 97-98. Thus the share of imports are rising in total demand whereas the share of Indian industry is declining. Sale of acrylic fibre, much below fair price has resulted in heavy loss of profit to the petitioners. The selling prices in Rs. per kg were 100.01, 89.04 and 82 respectively in 95-96, 96-97 and 97-98. Unit selling prices have therefore showed a declining trend.

(c-1) Closing stocks

It is observed that the closing stocks of the petitioner were 367 MT, 2085 MT and 3693 MT in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. Closing stocks went up by 468% in 96-97 over that of 95-96 and by 62.7% in 97-98 over that of 96-97. It is observed that out of 3393 MT of closing stock, 1649 MT was held by Pasupati Acrylon, 1408 MT by Indian Acrylic and 336 MT by consolidated Fibres. It has been submitted that the process of manufacturing acrylic fibre involves a very short cycle time, and the same is typically less than a week. It is claimed that no producer in the world keeps more than a few days stock. The average stock carried by the petitioner companies amounts to 1.4 months production. The petitioners are finding it difficult to hold the present level of inventories and the likelihood of further distress sale is imminent.

(d) Price undercutting and price depression

The petitioner companies have stated that imports from the subject country have been undercutting the prices of the fibre being sold by the domestic producers. The consumer industry has forced the domestic industry to reduce the prices under the pretext of cheaper imports from these countries. The petitioners have been constantly forced to offer heavy discounts in view of the threat posed by the dumped imports. In spite of increase in the cost of producing acrylic fibre, the Indian acrylic fibre industry has been prevented from increasing its selling prices. The dumped imports from the subject country have suppressed the prices of the fibre in the Indian market and caused immense losses to the petitioners. It is seen from DGCIS data that imports were priced at a lowest of Rs 55.8/kg during March'98. The average realisation per kg of acrylic fibre in 1996-97 was Rs. 89.04 per kg which dropped to Rs. 82 per kg during the period of investigation. It is also shown that the losses of the petitioner companies were Rs. 39.62 crores and 13.33 crores during 95-96 and 96-97. In 97-98, the petitioner companies earned a meagre profit of 4.06 crores whereas it is stated that industry should have made a minimum profit of above Rs. 100 crores in 97-98. However it is observed that different producers are charging different selling prices and profit/loss of the different companies vary. The selling prices charged were Rs. 87 per kg, Rs. 84 per kg and Rs. 78 per kg by Pasupati Acrylon, Consolidated Fibres and Indian Acrylic respectively. At this price level, Pasupati Acrylon had earned a profit of Rs. 11 crores, Consolidated Fibres suffered a loss of Rs. 17.28 crores and Indian Acrylics earned a profit of Rs. 10.34 crores during the period of investigation. The net profit was lower in view of higher provision for depreciation.

(e) Expansion of Capacity

It is stated that Indian Acrylics designed their plant in such a way that the capacity of the same was to be increased from 12000 Mt to 35000 Mt in stages. The company is however finding it extremely difficult both in terms of financial constraints and poor market conditions and is going very slow in their expansion. Imports have caused tremendous injury to the Indian industry in terms of growth.

(f) Inability to raise funds

It is claimed that the petitioner companies have found it difficult to repay the loans and the interest on the loans taken from financial institutions. This has prevented the companies from procuring further loans from the financial institutions and consequently affected their future plans for expansion.

(h) Inability to fund research and development activity

worldwide, acrylic fibre has numerous applications which include hosiery items, home furnishings (carpet market) and industrial usage too. The fibre can also be used for some speciality areas such as upholstery. However usage of the fibre in these areas requires investment in extensive R&D efforts which is difficult for the Indian industry in a situation where its survival is at stake on account of continuous dumping

K. CONCLUSION ON INJURY

11. In view of the foregoing it is observed that :—

- (a) the quantum of imports from the subject country have increased in absolute terms;
- (b) the market share of the petitioner companies has gone down;
- (c) the domestic industry has been forced to sell at prices below its fair price resulting in losses or low return on investigations;
- (d) imports are undercutting the prices of the domestic industry;
- (e) closing stock of the domestic industry has gone up;
- (f) domestic industry is not in a position to expand its capacity.

The Authority therefore concludes that the domestic industry has suffered material injury.

L. CASUAL LINK

12. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject country, the Authority holds that the increase in market share of imports from Mexico resulted in decline in the market share of the petitioner and undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its fair price. Resultantly, the domestic industry was not in a position to recover fair selling price. The material injury to the domestic industry was, therefore, caused by the dumped imports from the said country.

M. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

13. The purpose of anti-dumping duties, in general, is

to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

14. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of acrylic fibre. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

15. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of Acrylic Fibre in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

N. LANDED VALUE

16. The landed value of imports is determined on the basis of export price of Acrylic Fibre, determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one per cent landing and two per cent handling charges.

O. CONCLUSIONS

17. It is seen, after considering the foregoing, that :

- (a) Acrylic Fibre described under Para 5 originating in or exported from Mexico has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the Indian industry has suffered material injury;
- (c) injury has been caused by imports from the subject country.

18. It is considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury. Landed price of the imports, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigations.

19. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury. Landed price of the imports, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigations. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Gov-

ernment, on all Acrylic Fibre originating in or exported from Mexico falling under Customs sub-heading 5501.30 and 5503.30 of the Customs Tariff Act, pending final determination. The anti-dumping duty shall be the amounts mentioned in column 4, provided that the duty shall be the difference between the amounts mentioned in Col. 3 and the landed price of imports per kg. in case such difference is more than the amounts mentioned in Col. 4.

Country	Name of the Producer	Amount	Amount
1.	2.	3. (Rs.)	4. (Rs.)
Mexico	All exporters	83.7	2.20

20. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3a, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

P. FURTHER PROCEDURE

21. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings :

- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
- The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions;
- The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority

